द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का पुरावलोकन

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय–द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

किसी भी शोधकार्य को करने से पूर्व यह आवश्यक है कि शोधकर्ता को शोध से संबंधित जानकारी हो जिससे कि वह जिस विषय पर शोधकार्य करने जा रहा है उससे संबंधित शोधकार्यों से भली–भांति परिचित हो सके। इसके लिए उसे शोध संबंधी अन्य शोध कार्यों के संदर्भ ग्रन्थों का भली–भांति अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। संबंधित साहित्य को अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने जैसा होगा। इसके अभाव में सही दिशा में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक उसे पता न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से काम किया गया है, तथा उसके क्या निष्कर्ष प्राप्त हुएँ हैं तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को ही सम्पन्न कर सकता है।

डब्ल्यू.आर. बोर्ग (1965) लिखते है ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है, यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन व महत्वहीन होने की संभावना है।''

जान डब्ल्यू. बेस्ट (1963) के अनुसार ''व्यावहारिक दृष्टि से हमारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त, जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं। मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव

प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में इसके विकास का आधार है।''

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संबंधित साहित्य के द्वारा किसी भी अध्ययन से संबंधित समस्त साहित्य उपलब्ध किया जा सकता है कि किस क्षेत्र में कितना कार्य किस रूप में हो चुका है? लोगों ने क्या परिकल्पनाएं की थीं? किस विधि से आंकड़ों का संग्रह व सारणीयन व विश्लेषण करके क्या परिणाम निकाले? इसका निर्णय बड़ा ही महत्वपूर्ण है तथा अनुसंधान कार्य की वास्तविक पूर्णता में मदद करता है।

शोधकर्ता ने उपयुक्त विचारों को ध्यान में रखते हुए शोधकार्य की समीक्षा की ताकि प्रस्तुत अध्ययन के नियोजन एवं महत्वपूर्ण पदों के निर्धारण में सहायता मिल सके।

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

1. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतरदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधान कर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
4. संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
5. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है।

6. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

2.3 संबंधित शोधकार्यों का पुनरावलोकन

विदेशों में हुए शोधकार्य–

वर्तमान शोधकार्य से संबंधित विदेशों में भी इस क्षेत्र के सम्भवतः शोधकार्य हुआ है। विदेशों में शोधकार्य अधिकांशतः विद्यार्थियों पर किये गये हैं, अध्यापकों पर इस प्रकार के शोध कार्य करने पर बहुत कम ध्यान दिया है, इस संबंध में जो शोधकार्य हुए हैं उनका विवरण इस प्रकार है :

डूगल विग्सम एवं आर्थर (1982) ने अपने अध्ययन ''महाविद्यालयी कक्षा कक्ष में मूल्यों का शिक्षण'' के अंतर्गत चार प्रकार के प्रतिमानों का प्रयोग किया। अध्ययन के पश्चात यह पाया कि चारों प्रकार के प्रतिमानों में प्रतिमान संख्या तीन (मूल्य समर्थन प्रतिमानों) को वरीयता दी गई है। सभी व्यक्ति इस बात से सहमत थे कि उच्च स्तर पर मूल्यों का शिक्षण सम्भव है।

सिलीन रिचर्ड एवं लीन (1982) ने अपने अध्ययन ''व्यावसायिक शिक्षा के छात्रों में वर्क एक्सपीरियन्स का वर्क वेल्यूज पर प्रभाव'' का अध्ययन किया तथा यह पाया कि सात प्रकार के मूल्यों पर इस व्यवहार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

मरिस डेविड (1982) ने अपने अध्ययन ''धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन'' में चर्च के ऐसे सदस्यों को लिया जिन्होंने किसी धार्मिक पुस्तक को पढ़ा हो। उस पुस्तक के अध्ययन से संबंध में विचार–विमर्श किया गया। मूल्यांकन के पश्चात यह पाया गया कि स्वयं पढ़ना तथा दूसरों के साथ विचार व्यक्ति एवं ग्रन्थ दोनों के लिए उपयुक्त प्रक्रिया है। उच्च स्तर की प्रेरणा के लिए व्यक्ति द्वारा ही पूछना एक

महत्वपूर्ण घटक पाया गया तथा धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन एवं उस पर विचार–विमर्श मूल्यों के विकास में सहायक है।

स्ट्राइट ग्रे वेयन (1982) ने अपने अध्ययन ''माध्यमिक विद्यालयों में सामान्यतः अध्यापन किये जाने वाले उपन्यासों के मूल्यों के विकास'' हेत माध्यमिक स्तर पर अध्ययन किये जाने वाले चार उपन्यासों को किया गया। उनको मूल्यों के आधार पर सात वर्गों में विभाजित किया गया। अध्ययन के पश्चात पाया गया कि मूल्यों के विकास के लिए नैतिक मूल्यों से संबंधित इश्यूज काफी मात्रा में थे।

कलास केशल एवं स्पीक मैन (1983) ने अपने अध्ययन ''मूल्य कक्षा कक्ष की पारस्परिक अन्तःक्रिया एवं सामाजिक निरन्तरता'' में चार डे केयर अध्यापकों द्वारा छात्रों पर व्यक्तिगत एवं सामाजिक अनुभवों पर डाले गये प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन का निष्कर्ष निकाला कि जो चार डे केयर अध्यापक थे वे व्यक्तिगत एवं सामाजिक अनुभवों पर प्रभाव डालने में असमर्थ थे।

फ्रेक एडवर्ड जोजफ (1984) ने अपने अध्ययन ''माध्यमिक शिक्षा'' में वर्क वेल्यूज पर वर्क एक्सपीरियन्स का प्रभाव में नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक दो समूह को लिया। को–ऑपरेटिव वर्क एक्सपीरियन्स के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया तथा दोनों वर्गों में सार्थक अंतर पाया गया।

भारत में हुए शोधकार्य –

संबंधित साहित्य का अध्ययन करने के लिए विभिन्न स्टैटिसटिक्स, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक शोध ग्रंथ, इन–साइकलोपीडिया एवं पत्र–पत्रिकाओं का अलोकन किया। परन्तु इस समस्या से संबंधित बहुत ही कम शोधकार्य मिले सम्भवतः किसी शोधकर्ता का ध्यान इस समस्या की ओर अग्रसित नहीं हुआ। इस प्रकार के जो कार्य हुए थे अंशतः छात्रों पर ही किये गये इसलिए ऐसा शोधकार्य भारत वर्ष में नहीं के बराबर हुआ जिसका संबंध प्रत्यक्ष रूप से इस समस्या से हो।

मुख्य कार्य जो किये गये यद्यपि उनका प्रत्यक्ष संबंध प्रस्तुत समस्या से नहीं है, इस प्रकार है।

आनंद ए.एस (1980) ने शिक्षक मूल्य और कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया है।

उपरोक्त शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों के मूल्यों और उनकी संतुष्टि में संबंध को खोजना है। इस शोधकार्य में 143 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया, जिसमें 99 पुरूष व 44 महिलायें थीं। जो कि सिक्किम के विभिन्न स्कूलों मे अध्यापन का कार्य करते हैं। एक कार्य संतुष्टि और आलपोर्ट बर्नोन लिण्डजे की मापनी का उपयोग किया गया। अध्ययन के पश्चात यह पाया गया कि, शिक्षकों में शोध उपरान्त राजनैतिक और आर्थिक मूल्यों को अधिक पाया जबकि शिक्षिकाओं में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मूल्य अधिक देखे गये। धार्मिक और सौन्दर्यात्मक मूल्य निम्न स्तर पर महिला और पुरूष शिक्षकों में पाये गये। पुरूषों की तुलना में महिलाओं में कार्य संतुष्टि अधिक थी। यह भी देखा गया कि धार्मिक और सौन्दर्यात्मक मूल्य और शिक्षकों की संतुष्टि में सकारात्मक सहसंबंध थे।

काकुर एस.बी. (1981) ने शिक्षकों के मूल्य का छात्रों पर असर का अध्ययन किया है।

इस शोध के द्वारा छात्रों के मूल्यों पर शिक्षकों का परीक्षण किया गया। ओलपोर्ट बर्नोन लिण्डजे के मूल्य अध्ययन मापनी का ब्रिटिश रूपान्तरण का उपयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में पटियाला से 150 स्नातक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। परिणाम यह दर्शाते हैं कि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् प्रशिक्षणार्थिओं में सामान्य से कम परिवर्तन दिखाई दिया। यद्यपि परिणाम यह भी दर्शाता है कि शिक्षकों का छात्रों के मूल्यों पर क्या प्रभाव है। अतः शोधकर्ता सावधान करता है कि परिणामों का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता क्योंकि वह परिणाम कुछ विशिष्ट परिस्थितियों से प्राप्त हुए हैं। जिनके तहत शोधकार्य सम्पन्न किया गया।

राघवेन्द्र जी.यू (1984) ने सामाजिक रूप से वंचित व अवंचित छात्रों में मूल्य प्राथमिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि।

- सामाजिक रूप से वंचित व अवंचित छात्रों के सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यो में सार्थक अंतर है।
- बालक व बालिकाओं में सैद्धान्तिक, सामाजिक व सौन्दर्यात्मक मूल्यों के संदर्भ में सार्थक अंतर है।
- बालिकाएं बालकों की तुलना में सौन्दर्यात्मक मूल्यों में ज्यादा महत्व देती है।

अरुण उषा (1985) ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के सेकेण्डरी विद्यालयों के बालक व बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि–

- शहरी क्षेत्र बालक–बालिकाओं के नैतिक मूल्य ग्रामीण क्षेत्र के बालक–बालिकाओं की तुलना में अधिक है।
- बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा नैतिक मूल्य अधिक है।

मेहरोत्रा पी (1986) संघटनात्मक वातावरण में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और वैयक्तिक मूल्य के बीच संबंध का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य अलग संघटनात्मक वातावरण में शिक्षकों में कार्य संतुष्टि और वैयक्तिक मूल्य के बीच संबंध खोजना है। इस अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्कूल के 500 शिक्षकों को लिया गया। जिसमें 350 पुरूष और 150 महिला शिक्षक था। उनके द्वारा कार्य संतुष्टि, प्रश्नावली, वैयक्तिक मूल्य प्रश्नावली और वातावरण वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली देकर प्राप्तांक लिए गये। इसेके मुख्य निष्कर्ष हे कि कार्य संतुष्टि में बाहर की दुनिया के पहलू ज्यादा असरदार रहते हैं। अंतरिम वातावरण से कार्य संतुष्टि को पुरूष शिक्षकों में आर्थिक मूल्यों के साथ

संबंध पाया गया। जबकि कार्य संतुष्टि में महिला शिक्षकों में ज्ञानात्मक मूल्यों` साथ संबंध पाया गया।

गुप्ता आर.आर. (1987)–ने अवध विश्वविद्यालय के बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों का अध्ययन किया।

उपरोक्त शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य छात्र शिक्षकों द्वारा पालन किये जाने वाले मूल्यों की खोज करना था। न्यादर्श के रूप में अमेठी के 130 छात्र–शिक्षकों को चुना गया जिसमें 90 ग्रामीण 40 शहरी छात्र शिक्षक थे। आलपोर्ट बर्नोन लिण्डजे के मूल्य मापनी में हिन्दी मूल्य मापनी का उपयोग किया गया। मध्यमान, मानक विचलन को निकाला गया। शहरी छात्र–शिक्षकों की तुलना में ग्रामीण शिक्षकों में धार्मिक मूल्य उच्च स्तर पर पाये गये। जबकि शहरी छात्र–शिक्षकों में ग्रामीण छात्र शिक्षकों की तुलना में राजनैतिक, आर्थिक मूल्य उच्च थे। सौन्दर्यात्मक और धार्मिक मूल्य छात्र शिक्षिकाओं की तुलना में पुरूष छात्र शिक्षकों में अधिक पाये गये।

मिस्त्री टी.सी (1988) ने ग्रामीण, शहरी और निम गुजराती, कालेज और माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य और व्यक्तित्व के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

यह शोधकार्य उस अध्ययन को व्यक्त करता है, जिसके द्वारा उन कारकों को खोजा गया, जिससे मूल्यों, अभिवृत्तियों और शहरी, ग्रामीण तथा अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों के जीवन जीने के तरीकों में अन्तर पाया जाता है। इस अध्ययन हेतु आलपोर्ट की प्रश्नावली, एडवर्ड की व्यक्तित्व महत्व अनुसूची और मूरे की व्यक्तित्व आवश्यक परीक्षण गुजरात के ग्रामीण व शहरी के यादृच्छिक 111 शिक्षकों पे किया गया। अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों का एक नियमित ग्रुप भी न्यादर्श के रूप में लिया गया। राजनैतिक, सैद्धान्तिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और सौन्दर्यात्मक मूल्यों का अध्ययन किया गया। परिणाम प्रकट करते हैं, कि जो

अगुजराती थे वे अधिक आत्मकेन्द्रित और अधिक अध्ययनशील थे। जबकि ग्रामीण शहरी गुजराती शिक्षक लोग केन्द्रित थे। संघ सचेतक थे आर्थिक रूप से केन्द्रित और बहुत अधिक धार्मिक थे।

अत्रेय एवं जयशंकर (1989)-शिक्षकों के मूल्य एवं कार्य संतुष्टि में निम्न, औसत एवं उच्च अध्यापन प्रभावशीलता का अध्ययन किया है।

उपरोक्त शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों का निम्न, औसत एवं उच्च परिणामकारक अध्यापन के लिए मूल्यों एवं कार्य संतुष्टि से संबंध का अध्ययन करना था।

इस कार्य के लिए मिरत विश्वविद्यालय के 600 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। प्रो. गिलानी द्वारा प्रमाणित मूल्यों का अध्ययन प्रश्नावली और कुमार एवं माथुर की शिक्षक कार्य संतुष्टि प्रश्नावली का उपयोग किया गया। इसका निष्कर्ष यह आया कि अध्यापन प्रभावशीलता अंशतः कोटि पर मूल्य तथा कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया। अध्यापन प्रभावशीलता सामान्य रूप में पाया गया।

श्रीवास्तव विनोदिनी (1990) ने शैक्षिक मूल्यों द्वारा शिक्षकों की रूचि और कार्य संतुष्टि में बदलाव का अध्ययन किया।

उपरोक्त शोध कार्य के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे।

- शिक्षा के विविध स्तर पर कार्य करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं में रूचि का अध्ययन करना।
- शिक्षकों में विविध प्रकार के मूल्यों द्वारा रूचि में होने वाले बदलाव का अध्ययन करना।

➢ शिक्षा के संस्थानों के विविध क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों में मूल्यों द्वारा कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना और शिक्षक–शिक्षिकाओं के परिवर्तन के अंतर का अध्ययन करना।

प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर के 300 शिक्षकों का यादृच्छिक पद्धति से न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया।

– मुखोपाध्याय – रूचि में बदलाव की परिसूची।

– प्रमोद कुमार – कार्य संतुष्टि प्रश्नावली।

– एच.बी.एल. सिन्हा – शिक्षक मूल्य परिसूची।

प्रदत्तोंके संकलन हेतु मध्यमान, प्रमाणित विचलन, सहसबंध की सार्थकता, फिशर के 'जेड' सूत्र का उपयोग किया गया इसके मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित आये।

➢ शिक्षिकाओं में शिक्षकों की अपेक्षा कार्य संतुष्टि अधिक पाई गयी।

➢ प्राथमिक शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों एवं रूचि परिवर्तनों के संबंध में सार्थक अंतर पाया गया।

➢ माध्यमिक शिक्षकों के लिंग भेद अनुसार आर्थिक मूल्य, रूचि बदलाव में सार्थक अंतर पाया गया।

➢ उच्च स्तर के शिक्षकों के लिंग भेद अनुसार मूल्यों एवं रूचि परिवर्तन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

कुमार ए. (1991) ने प्रशिक्षणार्थी के मूल्यों का अध्ययन किया है। इसमें छात्र–शिक्षक प्रशिक्षणार्थियेां के मूल्यों के अध्ययन का उल्लेख किया गया है। इस

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रारंभिक और हायर सेकेण्डरी महिला व पुरूष छात्र–शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों की तुलना करना था।

हरियाणा राज्य के 200 छात्र शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली (डॉ. जी.पी. शेरी एवं डॉ. आर.पी. शर्मा) प्रश्नावली प्रदान की गई जिनमें कि सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, प्रजातान्त्रिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञानात्मक, विरताशक्ति, पारिवारिक, सम्मानजनक और स्वास्थ्य संबंधी मूल्यों का समावेश था। मूल्यों में अंतर जानने के लिए टी टेस्ट का उपयोग किया गया। परिणाम यह बताते हैं कि प्राथमिक विद्यालय के छात्र शिक्षक अधिक धार्मिक एवं भगवान से डरते थे। तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों को अधिक महत्व देते थे। जबकि हायर सेकेण्डरी के शिक्षक विशिष्ट ज्ञान रखते थे तथा परिवार के सम्मान के बारे में ज्यादा विचार करने थे। प्राथमिक विद्यालय की महिला प्रशिक्षणार्थी बहुत कम खर्चीली थी जबकि सेकण्डरी विद्यालय की महिला छात्र शिक्षक प्रशिक्षणार्थी बहुत अधिक सामाजिक थी। दूसरे मूल्यों में अंतर उपरोक्त मूल्यों की तुलना में सांख्यिकी रूप से विशिष्ट नहीं था।

शर्मा मिनु (1992) ने शिक्षकों का सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं मूल्यों के राष्ट्रीय अभिवृत्ति को जानने के लिए अध्ययन किया।

न्यादर्श के रूप में आगरा के 1200 प्राथमिक माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षकों को लिया गया। SES Scale (भारद्वाज), Attitude Scale (एन.एस. चौहान) और (एस.एन. चौहान) के उपकरणों का उपयोग किया गया है। इसका निष्कर्ष यह आया कि विभिन्न स्तर के शिक्षकों में सामाजिक आर्थिक स्तर अलग–अलग पाया गया परंतु उनकी Value Orientation एवं राष्ट्रीय अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं पाया गया। कुछ हद तक Value Orientation राष्ट्रीय अभिवृत्ति एवं सामाजिक आर्थिक स्तर भी आपसी संबंध रखते हैं।

जोशी, ज्योति (1994) ने संयुक्त और एकल परिवार के किशोरों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन किया उन्होंने पाया कि :

- संयुक्त परिवार के किशोरों में नैतिक मूल्य एकल परिवार के किशोरों की तुलना में अधिक है।
- एकल व संयुक्त परिवार के किशोर बालकों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- संयुक्त परिवार की किशोर बालिकाओं ने एकल परिवार की किशोर बालिकाओं की तुलना में अधिक नैतिक मूल्य पाये गये।
- संयुक्त परिवार के किशोर बालकों की तुलना में किशोर बालिकाओं में ज्यादा नैतिक मूल्य पाये गये।

सेवाश्रम, वशिष्ट (1997) ने एक प्रोजेक्ट ''इण्टरनेशनल एज्यूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग प्रोग्राम'' शुरू किया। जिसमें अध्यापकों व विद्यालयी शिक्षा में मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए आष्टांग योग पर आधारित एक नयी विधि तैयार की गई। इस विधि के प्रयोग से निम्न परिणाम प्राप्त हुए :

- मूल्य संबंधित क्षेत्रों में एक सार्थक विकास देखा गया।
- इसे प्रयोग में लाने से बालकों में मूल्यों के प्रति जागरूकता व ज्ञानात्मक अभिवृत्तियों का विकास देखा गया।
- निम्न उपलब्धि वाले बालकों के प्रतिशत में गिरावट आयी व मध्यम उपलब्धि वाले बालक, उच्च उपलब्धि वाले बालकों में बदल गये।

हसन, तेज (1998) ने आधुनिकीकरण और सामाजिक जाति के संदर्भ में हिन्दू और अहिन्दू छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन किया और पाया कि :

- मुस्लिम व हिन्दू बालकों में व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया परन्तु बालिकाओं में यह अन्तर नहीं पाया गया। क्रिश्चियन बालक व बालिकाओं में व मुस्लिम बालक व बालिकाओं में भी अन्तर नहीं पाया गया।
- उच्च आर्थिक स्तर व बड़े परिवार वाले छात्रों में व्यक्तिगत मूल्य निम्न आर्थिक स्तर व छोटे परिवार वाले छात्रों की तुलना में ज्यादा पाये गये।
- आधुनिकीकरण व सामाजिक आर्थिक स्तर में नकारात्मक सार्थक अंतर पाया गया।

सिंह, प्रभा, ओर सोनी, रश्मि (1999) इन्होंने महाविद्यालयी विद्यार्थियों की उन्मादावस्था एवं सामाजिक मूल्यों का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि :

- लिंग व भाषा के आधर पर पृथक किये गये समूहों के समान मूल्य पाये गये।
- अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों ने समझदारी, आत्म सम्मान, आरामदायक जीवन, पारिवारिक सुरक्षा, प्रसन्नता, सच्ची मित्रता व राष्ट्रीयता को प्राथमिकता दी।
- अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में हिन्दी माध्यम की तुलना में समझदारी को प्राथमिकता दी।

- पुरूषों ने भी महिलाओं की तुलना में समझदारी को प्राथमिकता दी।
- उन्मादावस्था तथा मूल्यों के बीच में सार्थक संबंध पाया गया।

सेन गुप्ता एम. (2001) ने वर्तमान समय के शिक्षण अधिगम वातावरण में अच्छे अध्यापक के गुणों व मूल्यों के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया और पाया कि :

- बालक अध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों, उनके व्यावसायिक मूल्यों, नपाचारों तथा शिक्षक अधिगम तकनीकों को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं।
- वे अध्यापक जो बालकों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता देते हैं उनकी समस्याओं को समझते हैं तथा स्वयं आदर्श प्रस्तुत करते हैं, उन्हें बालक महत्ता देते हैं।